RESEARCH LINES

Owned, Printed & Published by
Dr. Tharsis Joseph, Principal
Deva Matha College
Kuravilangad, Kerala-686 633
Phone No: 04822-230233, 232951
Fax: 04822-232951
E-mail:devamatha1@sify.com
Website :
www.devamathacollege.ac.in

Printed at
Archana Offset Printers, Kottayam

Periodicity 2 issue per year

® All rights are reserved

Scanned with OKEN Scanner

नारी अस्मिताः मृदुला गर्ग की 'हरी बिन्दी' के परिप्रेक्ष्य में

Dr. Santy Joseph

मद्यवर्गीय लोगों के यौन प्रश्नों, कुंठाओं और परेशानियों को सहज ढंग से चित्रित करनेवाली मृदुला गर्ग का जन्म २५ अक्टूबर १९३८ को दिल्ली में हुआ। उनके प्रसिद्ध कहानीसंगह हैं 'उसके हिस्से की धूप', 'अर्फ सैम', 'कितनी कैदें', 'टुकडा टुकडा आदमी', 'डेफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'दुनिया का कायदा' आदि।

मृदुला गर्ग की अधिकतर कहानियाँ आम आदमी के दर्द की कथा चित्रित करती है। वर्तमान समाज में नारी किसी भी बन्धन में बन्धकर जीना पसंद नहीं करती है। सामाजिक बन्धनों में जकडी नारी के प्रति मृदुला गर्ग अपनी रचनाओं में सहानुभूती प्रकट करती हैं। विद्रोह का स्वर उठाकर नयी नैतिकता की स्थापना करने का प्रयास उनकी रचनाओं में दर्शनीय है। "मृदुलाजी ने विशेषकर नायिका प्रधान कहानियों की रचना की हैय़ उनकी आत्मनिर्भर तथा आत्मसजग नारियों के सामने पुरुष पात्र बौन सिद्ध होते हैं। मृदुला जी की कहानियों में देहरी पर खडी झिझकती औरत देहरी लांघ बाहर आ जाती हैय़ ये दमदार जीवंत औरतें हैं कोई आन्दोलन फांदोलन नहीं करती। परन्तु अपने निर्णय स्वयं लेती हैं और परवाह नहीं करतीं कि कोई क्या कहेगा। इनमें विवेक की दीप्ति है। मृदुला गर्ग की स्त्रियाँ अति साधारण घरेलू स्त्रियाँ हेते हुए भी बडे समर्थ भाव से अलग खडी दिखती हैं अपनी इच्छा और अनिच्छा के साथ।"[१] नारी के प्रति समाज के अयुक्तिक एवं अन्यायपूर्म दृष्टिकोण पर कुछ कहानियों में वे तीखा प्रहार करती हैं। साधना अग्रवाल के शब्दों में "दुनिया का कायदा में मृदुला गर्ग ने यह बताया है कि यदि पत्नी मर जाए तो पति को तुरन्त पुनर्विवाह की अनुमति मिल जाती है लेकिन यदि पत्नी के साथ ऐसा होता है तो समाज उसको हीन दृष्टि से देखता है। इसमें इस कुरीति पर व्यंग्य किया गया है। पत्नी के मर जाने पर पुरुष का विवाह तो दुनिया का कायदा कहलाता है। इसके दूसरे भाग में क्लबों में डांस पार्टियाँ आदि दिखाई गई हैं"।[२]

भारतीय सभ्यता के अनुसार पत्नी का पति के प्रति निष्टावान रहना आवश्यक है। इसके अलावा, समर्पित और प्रतिबद्ध रहे, पराये पुरुष की ओर आँखें उठाकर न देखे। अन्य पुरुषों के साथ घुल मिलकर बात भी न करे। उत्तराधुनिक युग में भी, पत्नी को घर की चार दीवारी में बैठकर पति, बच्चे और ससुरालवालों की सेवा करना है, ऐसा माना जाता है। खिड़कियाँ खोलकर शुद्ध हवा से मन और शरीर को शीतल करना कई स्त्रियों केलिए आज भी स्वप्न मात्र है।

परंपरागत लाल रंग की बिन्दी के स्थान पर हरी बिन्दी लगाकर मृदुला गर्ग की 'हरी बिन्दी' की अनाम नायिका, परंपरा के विरुद्ध करती है। प्रस्तुत कहानी के बारे में सरिता सूद लिखती है हरी बिन्दी कहानी में विवाहित नारी की मानसिक दशाओं का चित्रण किया गया है। ... यह भारतीय परिवेश में नये मोड़ का सूचक है। इस नारी का दायरा बड़े घरानों तक सीमित है जहाँ पश्चिम का गन्ध है या नगल है... उसे अपने पति की आदतें अकरती है। वह नयी आदतों की खोज में है। वह पराये पुरुष की संगत में अपने को स्वतंत्र अनुबव करती है... वह अतीत में रहने की बजाय आगत में रहना चाहती है, लेकिन वह अतीत से छुटकारा नहीं पा सकती। पिक्चर देखने के बाद वह घर लौटने को विवश है।"[३]

पति राजन की अनुपस्थिति में कहानी की अनाम नायिका अपने को पुरुष से मुक्त और स्वतम्त्र मानती है। इसलिए वह निश्चय करती है कि आज का दिन यूँ ही नहीं जाने देगी। "खेर आज वह स्वतंत्र है। जो चाहे, करे। उसने शरीर को ढ़ीला छोड़

Lecturer (Guest), Dept. of Hindi,
Deva Matha College, Kuravilangad, Kottayam Dist.

Scanned with OKEN Scanner

दिया और दुबारा सोने की तैयारी करने लगी। फिर जब वह आंख खुली तो साढ़े आठ बज चुके थे।"[४] वह देर से उठती है, ठण्डे पानी से नहाती है, इसके बाद नीले कुर्ते पाजामे के साथ बड़ी सी हरी बिन्दी लगाती है। "राजन होता तो कहता नीले पर हरा? क्या तुक है? उसने दर्पण में देख रही अपनी प्रतिछाया की ज़बान निकाल कर चिढ़ दिया, कहा, "तुक की क्या तुक है" और खिलखिलाकर हँस पड़ी"[५] नकली और बड़ी - बड़ी बालियाँ कानों में लटकाती है और बिना कोई निर्णय लेकर अकेले घूमती है। जहाँगीर आटे गॅलरी में प्रदर्शनी देखकर अकेले मुक्त रूप से हँस पड़ती है। एक रेस्तराँ में गरमागरम टिकिया की प्लेट और आइस्कीम एक साथ मँगबाकर खाती है। "उसे ठण्डा और गरम एकसाथ खाना बहूत भला लगता है। कहते हैं, दांत खराब हो जाते हैं। कितना चटपट काम हो गया आज, राजन रहता है तो बढ़िया जगह बैठकर आराम से खाने की सूची देखने के बाद सोच-विचार कर आदेश दिये जाते हैं।"[६]

सिनेमा घर में जाकर पति की नापसंद के 'डेनी के' की पिक्चर देखती है और अदाकार की एक मुद्रा पर इतना हँसती है कि हाथ पास बैठे एक अजनबी पुरुष से टकरा जाता है। साँरी कहने के बजाय वे पुनः ठहाका लगा लेते हैं और तदनन्तर ठहाका का कम-सा चल पड़ता है। "अदाकार की एक खास बेचारगी की मुद्रा पर वह दोनों इतनी ज़ोर से हँसे की उनके हाथ आपस में टकरा गये। साँरी कहने के इरादे से वे एक दूसरी की तरफ मुड़े पर माफी मांगने के बजाय एक ठहाका और लगा गये।"[७] पिक्चर के बाद वह इस अनजान-बेगाने पुरुष के साथ एक रेस्तराँ में जाती है। दोनों देर तक बातें करते है। अजनबी होने पर भी दोनों एक दूसरे के विषय में पूछनाछ न करती हैं और न ही रूमानी बातें करता है। "... सबसे अच्छी जगह कौन सी लगा।"

"जब जहाँ हुआ", कहकर वह हिचकिचाहट के साथ मुस्कुराया,...."

कॉफी हो जाने पर बिल देने की जिदद न करके उसके व्यक्तित्व को बिखरने से बचा लेता है। अन्त में वह अजनबी पुरुष उसकी हरी बिन्दी की प्रसंसा करता है।

प्रस्तुत कहानी में नायिका का देर से उठना, ठण्डे पानी से नहलाना, नहाने के समय गज़ल गाना, नीले रंग वस्त्र के साथ हरी बिन्दी लगाना, कान में नकली बड़ी-बड़ी बालियाँ पहनना, धुन्ध में कुलापन महसूस करना, अकेले धूमना, जहाँगीर आर्ट गॉलरी में प्रदर्शिनी देखर मुक्त रूप से हँसना, रेस्तराँ में गरमागरम आलू टिकिया के साथ आइस्क्रीम खाना, पति राजन की नापसंद के डैनी के 'का पिक्चर देखना, आदाकार की एक मुद्रा देखकर भारतीय परंपरा के विरुद्ध ज़ोर से हँसना, अजनबी पुरुष के हाथ सी हाथ टकरा जाने पर टहाकीं का कम सा चलाकर हँसना, फिर उसके साथ रेस्तराँ में बैठकर बातें करना, खिलाखिलाकर हंसना, बातें करते हुए एक साथ टैक्सि में वापस जाना, सभी प्रवृत्तियाँ भारतीय संदर्भ पर विद्रोह के सूचक हैं। यहाँ नायिका पति की अनुपस्थिति में स्वतंत्र जीवन का आस्वादन करती है। पुरुष की इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छानुसार सभी कार्य चलती है। वह अपनी अस्मिता को पहचानने की कोशिश भी करती है। प्रस्ततुत कहानी की रचना प्रक्रिया के बारे में श्रीमति मृदुला गर्ग कहती हैं "मुझे याद आता है कि घटाटोप धुध के घिर आने पर मेरे अन्दर वह बेचैन कर देनेवाला सौन्दर्य बोध जगा था जिसने मुझ से हरी बिन्दी कागज़ पर लिखता डाली।"[८]

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ:

१. मृदुला गर्ग का कथा साहित्य : डॉ.सौ. तारा अग्रवाल, पृ. ५३

२. वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन : अग्रवाल, पृ. ८९

३. महिला कहानीकारों की कहानियों में प्रेम का स्वरूप, सरिता सुद, पृ. ६४

४. कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ. ३१

५. वही, पृ. ३२

६. वही, पृ. ३३-३४

७. कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ. ३४

८. कितनी कैदें मृदुला गर्ग, पृ. ३६

Scanned with OKEN Scanner